



स्वर

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
जसवतराय जैना

न

श्रीमुनिवल्लभविजयजीमहाराजकी  
खास प्रेरणा और आज्ञा से रचा,

और

वनारसी दास जैनी

जनरल बुक डिपो, लाहौर

ने

छपवाया

—०—

घरि सम्बत् २४३९, भात्म सम्बत् १७

मूल्य दो पैसे]

[उटीवार २०००

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय  
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

वाम्बे पेशीन प्रेस, लाहौर

कराकर निम्नलिखित पुस्तक के अन्तर्गत कारन का लक्षण  
 की सहायता से हमने यह नवग्रहशांति हिन्दुस्तानी भाषा  
 गुटका रूप में छपवाई है, इसमें प्रत्येक ग्रह की दशा में य  
 दान की वस्तुयें आदि विधिनिर्दिष्ट हैं मर्य मा प्रारण  
 हमने इसका मूल्य केवल डेढ़ आना - १॥ रखा है, राठने के  
 २०से अधिक खरीदे, उसमें एक आना ही प्राप्ति कापी लिये

## दयानन्दकृतकर्मिभिरतरि

विदित हो कि उक्त नाम की पुस्तक श्रीमान् श्रीमु  
 विजयजीकृत हिंदी भाषामें छपकर त्पार हो गई है। उर्दू  
 भाषा की पुस्तक से कई प्रकार की विशेषतायें जो उर्दू  
 आसकती थीं, इसमें की गई हैं, हिंदी भाषा पढ़नेवालों  
 लेना चाहिये। तपगन्धपट्टधारी श्री १००८ श्रीमद्वि  
 महाराज की फोटो सहित मूल्य केवल छे आना रख

जसवतर

श्रीवीतरागाय नमः ।

# जैनबालोपदेश \* 31

स्वर

न आ इ ई उ ऊ  
ऋ ॠ ए ऐ ओ औ  
अं अः

व्यजन

ख ग घ ङ च छ  
झ ञ ट ठ ड ढ

नोट-उं औ और ऋ ॠ ऐसे भी होते हैं ।

पकको चाहियेकि इनसय अक्षरों का अक्षयास करावे औरलिखवोंव

त ता ति तां तु तू ते ते तो तौ त तः  
 थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः  
 द दा दि दी दु दू दे दे दो दौ द दः  
 ध धा धि धी धु धू धं धे धो धौ धं धः  
 न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ न नः  
 प पा पि पी पु पू पे पे पो पौ पं पः  
 फ फा फि फी फु फू फे फे फो फौ फ फः  
 व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः  
 भ भा भि भी भु भू भे भे भो भौ भ भः  
 म मा मि मी मु मू मे मे मो मौ म मः  
 य या यि यी यु यू ये ये यो यौ य यः  
 र रा रि री रु रू रे रे रो रौ र रः  
 ल ला लि ली लु लू ले ले लो लौ ल लः

## स्वरमात्रा

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अ अ.  
 ि ि ि ० ० ० ० ०

१. २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

अ

तन मन धन वन जन जल मल  
 छल फल खल नर वर कर डर  
 घर रस वस जस फस देस  
 कमल वचन कपट खल्ल

घर चल, सच मन धर, कपट मत कर, जप  
 तप कर, मन वच तन वस रख । स्थ पर चढ चल ॥

आ

माल काल छाल फाल जाल  
 तान मान धान वान जान  
 जला भला चला तला कला

~~ह्रा भ्रा क्रा म्रा ख्रा~~  
 ट टी टि टी टु टू टें टैं टौ टौ टं टंः  
 ठ ठा ठि ठी ठु ठू ठें ठैं ठौ ठौ ठं ठंः  
 ड डा डि डी डु डू डें डैं डौ डौ डं डंः  
 ढ ढा ढि ढी ढु ढू ढें ढैं ढौ ढौ ढं ढंः  
 ण णा णि णी णु णू णें णैं णौ णौ णं णंः

त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ त तः  
 थ था थि थी थु थू थे थै थौ थौ थ थः  
 द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ द दः  
 ध धा धि धी धु धू धं धं धौ धौ ध धः  
 न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः  
 प प्रा पि पी पु पू पे पे पो पौ पं पः  
 फ फा फि फी फु फू फे फे फो फौ फ फः  
 व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ व वः  
 भ भा भि भी भु भू भे भे भो भौ भ भः  
 म मा मि मी मु मू मे मे मो मौ म मः  
 य या यि यी यु यू ये ये यो यौ यं यः  
 र रा रि री रु रू रे रे रो रौ रं रः  
 ल ला लि ली लु लू ले ले लो लौ लं लः  
 व वा वि वी वु वू व वै वा वौ व  
 श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ श  
 ष पा पि पी पु पू पे पे पो पौ ष  
 स सा मि सी सु सू से से सो सौ स  
 ह हा हि ही हू हू हे हे हो हौ ह

१-२ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

अ

तन मन धन वन जन जल मल  
छल फल खल नर वर कर डर  
घर रस वस जस फस दस  
कमल वचन कपट खलल

घर चल, सच मन धर, कपट मत कर, जंप  
तप कर, मन वच तन वस रख । रथ पर चढ चल ॥

आ

माल काल छाल फाल जाल  
तान मान धान वान जान  
जला भला चला तला कला

<del>हग</del>	<del>भग</del>	<del>कग</del>	मरा	खरा
काला	माला	ताला	वाला	छाला
राजा	ताजा	खाजा	वाजा	गाजा
आगम	नागन	गायन	रागन	फागन
गागर	चाकर	ठाकर	चामर	सागर
चारण	तारण	दारण	धारण	कारण



डकार अकार जनाव खराव उदास  
 वगार उदार अतार नवाव पचाम  
 समता ममता गमता रमता नमता

पाठशाला जाकर पाठ थाद कर । मान मत कर ।  
 दया दान कर । रात भर मत जाग । सदा मल्ल कर ।  
 कपाय चार जान । समता धारण कर । जाल मत-  
 लगा । माता का कहा मान । आगम ४५ जान ॥

इ

जिन	दिन	चिर	विप	हित
कपि	ससि	रवि	पति	अरि
तिथि	मिति	निधि	विधि	गिरि
लिखना	मिटना	विवाह	विहार	

मिलाप ~~कितवि~~ हरिदास ~~शशिपार~~

अभिमान मत कर । सामायिके वारण कर  
 जिन भजन कराहित मित वचन कहादिननाथ ठिग  
 गया । जिन जगनाथ का शरण धार । अधिक  
 आहार मत कर । जिन वचन मन धार । गिरि  
 नार पर पद चल ॥

ई

गीत रीत पीत वीत मीत शीत  
 दीन हीन खीन मीन तीन चीन  
 ताई माई भाई नाई गाई राई  
 शरीर समीर फकीर अमीर करीर  
 गरीब नखीब अजीब तवीब करीब  
 पीतल शीतल

लडाई मत कर । सब की भलाई कर । वीत-  
 राग भगवान का जाप जप । गाली मत निकाल  
 भीठी बात कर । शीतलनाथ भगवान्, दसमा अवतार  
 जान । दीन हीन पर दया कर । बडा भाई पिता  
 समान जान । समकित धार कर मायाचारी मत बन ।  
 पानी छानकर पी । रात आगई आहारका पारिहार धेर

उ

सुख दुख मुख गुण सुर  
 पशु कटु धनु मनु वहु  
 गुरु शुरु साधु पुरुष धनुष

दुख सहन करना सीख । साधु मुनिराजकी  
 श्रद्धा कर । गुरु महाराज की आशातना मतकर ।

दीन दुखिया पर करुणा कर । किसी की बुराई मत  
 कर । गुरुका वचन हितकारी मानकर सिरपर धार ।  
 सुमति नाथ महाराज आज कर मुझ भयसागर पार ।  
 कटुवचन मत कह । शुभ करगी बिना जीवन पशु  
 समान जान

ऊ

रूप	धूप	कूप	भूप	चूप
रूपा	जूता	माजू	राजू	भृमी
भूपण	भपण	ममल	सूरत	

झूठी बात मत कर । किसी का वन मत छूट  
 जरूर भला कर । भला कर भूल जा । पढा हुआ  
 पाठ मत भूल । अजितनाथ दूसरा अवतार पूज ।  
 जिन् वानी अनुमार फल फूल पूजा जान ।  
 कुसुममाल करी पूजा रचा ॥

ऋ

नृप	घृत	तृण	मृग	सृज
कृपा	तृपा	मृता	कृता	वृथा
धृति	अमृत	मृदु	पृथिवी	सुकृत

घृणा मत कर । धन तृण समान जान । दीन  
 हीन पर कृपा रख । अनृत वचन परिहर । मृदु वचन

सुखदाई जान । नरभवं वृथा मंत कर । घृत घी का  
 नाम जान । जिनवानी अमृत समान मान । मृग  
 हिरण का नाम । ऋण बुरा जान । ऋतु अनुसार  
 पान कर ॥

ए

रेल	तेल	मेल	बेल	खेल
केला	चेला	मेरा	तेरा	बेटा
बेटी	तेली	धनु	पेटु	रैलु

तेल भी एक विगय जान । गुणी बेटा एक  
 ही भला । किसी का धन देख कर खेद मत कर ।  
 नेमनाथ जिनदेव बावीसमा अवतार जान । अपने  
 देश का वेश पहन । जिनदेव की सेवा करनी  
 चाहिये । अनाचारी के साथ मत चल । नीचे देख  
 कौड़ी आदिक की जान बचाते हुए दया के  
 भाव से चलना चाहिये ॥

ए

वैर	जेन	बेल	देव	शैव
मेना	मैला	जैसा	पैसा	कैसा
वैसाख	सदेव	तेजस	मैथुन	मैदान

जिनवैन मानने वाला जैनी है । जिसके हृदय  
जिनवचन नहीं, वह जैनी नहीं । जैनमतका मूल  
दया है । जैन सनातन मत है । जैसे गुरु वैसे चले ।  
धन हाथ पग की मैल है । भले पुरुष किसी से वैर  
नहीं रखते । किसी से वैर मत रख । दैव बली है । मैला  
कुचैला कपडा मत पहन ॥

ओ

चोर मोर रोग शोक दोष  
तोता रोटी मोती मोटे भोल

सच बोल । पूरा तोल । किसी को दोष मत  
रो । अपने किये का फल है । चोरी करना पाप  
है । धन के नाश होने पर बहुत शोक मत कर ।  
अपनी पोथी मैली मत कर । मोर बोलता है । गन्  
को भोजन करना महा पाप है । पानी छान कर  
पीना रोटी रात को न खानी जैनी की निशानी है ।

औ

चौर नौश्र धौन और गौर  
औपध चौदह चौबीस पकोड़ी

कौड़ा बोल मत बोल । दुःखी जीव को औषध  
दान करादान के चार भेद जान । जैन साधु लोभी  
नहीं होते कौड़ा मात्र अपने पास नहीं रखते ।  
मौत सब पर बली है । चौथ की छमछरी करनी जैन  
की रीति है ॥

अअः

अंग संग रग फंद छंद

पांच चिता परतु संसार . .

अतः, अतःकरण, परः, पुनः, पुरः,

चदनवाला ने महावीर भगवान को उडद के  
वाकले दिये । चदनवाला महासती थी । मंदिर जी  
जाकर जिनराज की पूजन जल चावल, केसर, चदन  
धूप, दीप, फल, फूल आदिक से कर । जैन आगम  
में मंदिर बनवाना कथन किया है । रायपमेणी जैन  
आगम में सुरियाभदेव की तरह पूजा करनी कही  
है । ससार दुःखों की खान है । चिता चिता समान है

अजना सुन्दरी की कथा ॥

जब पवनजय अजना सुन्दरी को विवाह  
अपने नगर में ले आया, तो पाँछे किसी अभिमान  
के वशीभूत हो मन में भी उसकी सार संभाल न

करता भया, इससे अजना सुन्दरी को अतीर पीडा हुई और दु ख में काल गुजारने लगी, एकदा समय रावण का दूत पवनजय के पिता पाम आकर कहने लगा, कि 'वरुण के साथ लडाई करने को जाना है, इस कारण आप को रावण ने चुलाया है, इस पर पवनजय पिता से हुकम लेकर माता को सविनय बदना कर चल पडा, परन्तु चरणों में पडी हुई और शरणागत अजना का अनादर ही किया ॥

पहिला पडाव एक सरोवर के निकट किया और रात के समय पवनजय उस सरोवर पर एक चक्री को चक्रे के प्रियोग से रुदन करती को सुनता भया, उस का रोना सुनकर अपनी अगता भी याद आई, और उसी समय अजना के महल में आया और नेवता है कि अजना पाति के प्रियोग से शोकमागर में डूबी हुई केरा विखरे हुए बावली पडी है, यह रात पवनजय ने अजना के पास ही गुजारी और उसको शांति किया और चलने के समय अपने आगेगने की निशानी रूप अंघुड़ी उस को दे गया, देवयोग से उमी रात पवनजय से अजना

में संतान का कारण भया, पीछे मास ने अजना को अनादर से कहा कि कुलको कलक लगाने वाला यह उदर कहां से बढ़ा किया है, तो उमनेपाति की वह दी हुई निशानी दिखाई, परंतु सास ने एक न माना और अपमान कर काले कपड़े पहना काले ही रथमें चढ़ा किसान वन में छोड़ने को नौकर को हुकम दिया, माता पिता आदिक से भी आनादर की हुई वनो में भ्रमती और अपने पैरों से निकले रुधिर से मानों भूमि को अंकित करती हुई वह एक उजाड़ वीयावान जंगल में पहुची, अनेक तकलीफ सहन करती हुई भी वह अपने शील की पालना करती भई। वनकी एक गुफा में बालक पैदा हुआ, और उसका मामा अपने नगर अनुरुहपुरमें ले गया, इस कारण बालक का नाम हनुमान पड गया और इस तरह से वह मामा के घर बड़ा हान लगा ॥

इतने में रावणकी मदद करके पवनजय नगर में आया और अपनी अंजना को निकाले जाने का सुन अतीव खेद में अंजना सुंदरीके प्रियोग से पवनजय पड़कर मरनेके भाव की खबर सुन कर हनुमान की



रता मामा अजना और हनुमान को लेकर आया, देखकर  
 ई आँवको अतीव आनंद हुआ, हनुमान का मामा उन  
 वण सब को अपने घर ले गया और कालांतर में हनुमान  
 गा, और अजना सहित पवनजय अपने नगर में आय  
 त कभीर माता पिता को वदना की, इतनेमें सीता का हर  
 वनल आ और हनुमान रामचदजी की सहायता करता भ  
 दना पीछे पवनजयराजपाट हनुमानको दे ससार उ  
 रणा, शेषपद को पहुँचा और अजना भी मुनि चदसूरि  
 पास संयम धार सब उपायों का नाश कर पति क  
 भनुगमन करती भई, माता पिता की तरह हनुमान भ  
 त के चिरकाल एगिची का पालन कर अपने बेटे को राज  
 च अभिषेक कर मुनि देवमूरि के पास संयम अगीका  
 स क कर महा तप करता हुआ विमलाचल पर आयो औ  
 और उअविनाशी गति को विवारा, इति अजना कथा ॥  
 खता है ।

### भजन

हूँ न हूँ न ऐश बहार परानी सदा न ऐश बहार रे ।  
 पवनजय ने काले केश रहेसे महा गुजारी और  
 सको शांति किया और सुत परिवार रे, सदा य  
 पने मले तन अपने, ओडक होसी छारे, सदा य  
 ने दे गे साथ चलेगे, और न जासी लारे, सदा य  
 धारामो नू जिनवर जपले, हो नारी भवसे पारे





বে দয়া, নামে কচি ভক্তি ভগবানে ।

— ० —

কোন প্রাণি কখন ভীত না হয়, কোন প্রাণি হইতেও তাহার  
কখনও কোন ভয়ব সম্ভাবনা নাই।” ভীষ্ম বাক্য ।

— ० —

“ন চ বশ্য দয়াপব ।”

৫

সর্বজীবে দয়াই তর্পন্য্য ।

স্বাহিসাই পরম বশ্য ।

— ० —



# উৎসর্গ পত্র ।

.....

ঔস্বর্গগতা কেশব কুমারী দেবীর

নামে

ভক্তির সহিত জীব-দয়্যা

এসে

উৎসর্গ করিলাম ।

## আমাব নিবেদন ।

আমি সন্যাসী মণ্ডলীক প্রায় বহিতেছি। জীবনকালে দেখিলে  
 জীবের সঠিক ভণ্ডানকে মনে পড়ে। মানুষ পশু, পক্ষী, কীট পতঙ্গ সকলেই  
 এক পরম শিশু পবামশব ও হৃৎস্বন্দনী ভণ্ডণীর সন্ধান। আমি যিহ্নে শক্তি  
 এবং প্রসিদ্ধ শক্তি উপাস্য সাধক সর্গানন্দের যিহ্নে বশে ছয় হরণ বহিয়াছি।  
 নিজেব ভীয়েনে অনেক দাঃ প্রতিঘাত পাইয়াছি এবং জীবগুলি কেন পবম্পব  
 পবম্পবকে হান লবে তাহা ভাবিয়া স্থির কবিত্তেও পাবি নাই। আমাদের  
 নিজ ১৮ ও মাহেব পূজার এবং অশ্বাপদ মেদশব নিকট বলি হয় কি?  
 ই বশিব সময়ে বগাবব জাগার প্রাণেব ভিত্তরে কেমা করিয়া উঠিত।  
 এখন বিচাব কবিয়া দেখিত্তেছি যে এই পশু বধ আমাদের পক্ষে ধর্ম হানিকব।  
 অতএব জীবের প্রতি দাঃতে জীবের দয়া হইতে পাবে তাহার অত্র এই ক্ষুদ্র  
 পুস্তিকা প্রেরণ কবিলাম। আমি পুঞ্জ ও বৈজ্ঞানিক উপায়ে মানুষব  
 খাত্তাবিক দাঃ কি? সেই সন্দকে এক খানি পুস্তক প্রণয়ন কবি।  
 ত্রিযুক্ত রাজ বুমার সিং মহাশয় ঠাঃাব স্বগগতা পত্নী কেশরী কুমারী দেবীর  
 আয়াব কল্যানার্থে এই পুস্তক প্রায়ণ ও দাঃতে সাধাবণে উহা প্রচাব হয়  
 তাহার ব্যয় ভার গ্রহণ কবাতে আমি উহাকে আন্তবিক ধন্যবাদ দিত্তেছি।  
 কোন ছাবকেই যে আমাদের হত্যা করা উচিত নহে এবং অহি মাই আমাদের  
 পরম ধর্ম তাহা বুঝিতে পারিয়া এই গ্রন্থ প্রচাব কবিলাম। অবশ্য বিদ্বজ্জন  
 তর্কিকেরা আমায় ক্ষমা করিবেন। ইতি—

শ্রীতারা ঠাঃ ব্রায় চৌধুরী ।

# ଜୀବେ ଦକ୍ଷା ।

— ୦ —

‘ ଜୀବେ ଦକ୍ଷା ନାମେ ବଡ଼ି ଭକ୍ତି ଭଗବାନେ ।’

— ୦ —

## କ୍ରିଷ୍ଣ-ଉକ୍ତି ।

“ଆମର ନଡ଼େ ଅଛି, ମାତ୍ର ପରମ ଧର୍ମ । ଦବ, ଦିଗ୍ଘା ବାକ୍ୟେ  
ପ୍ରୟୋ । ଦରା ଯାହିତେ ପାବେ, କିଟ୍ଠି ପ୍ରାଣି ତି ମା  
କଦାଟି କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ନହେ ।”

## ସାନ୍ସ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ।

ଆମରା ଦେଖିତେ ପାହି ଏମାତ୍ର ଚାରିଦିନେ ମାନବ ନିରାପତ୍ତ ଚଳନାଦି  
ଦିଗ୍ଘାକର ନିରାମୀୟ କାର୍ଯ୍ୟ ଦିଗ୍ଘା ଓ ଆମାମାଳା ଦେ ଭଗବାନେବ କ୍ଷୁଦ୍ର ପ୍ରାଣିବେବ  
ନାମା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଥାହା ଜୋର କରିତା ବାଳିକା ଚା । ଆମରା ବଧା ଦେଖିତେ ପାହି,  
ମାନବମାନ ବିରୀଣ ପତ୍ରପତ୍ରକ ହେବ ନବେ, ଏବ ନିରାପତ୍ତ ଚାରିଦିନେ, ବାହା  
ଏବ ଓ ଚାରିଦିନେ ପାପପତ୍ରକ ଚାରିଦିନେ, ତଥ୍ୟ ଆମାମାମାନ ନାମ ନକେବ ହେବ  
ଏବ ମାନବମାନ ବାହା ଭଗବାନେବ କ୍ଷୁଦ୍ର ଜୀବେବ ନବେ ଜ୍ଞାନେ ବିଦ୍ଵାନେ ଦୈବୀଦାମିତ  
ନାମା, ଦୈବୀଦାମିତେ ମାମା ।

ମାନବ ଦେବ ମନ—ମନୁଷ୍ୟ ଅଧିକାରୀ, ଯେ ମନୁଷ୍ୟ ସର୍ବମାନ ବିବେକମାନ  
ଓ ବିଦ୍ଵାନମାନ ଦେ ଜୀବ ଦେବ ମାନବ । ଦୀନୀର ମନମାନ ଶକ୍ତି ମୁକ୍ତ ମନୁଷ୍ୟ ବିଦ୍ଵାନ  
ବାଳିକା ମାନ ଚାରିଦିନେ ମନୁଷ୍ୟ, ଚାରିଦିନେ ମନୁଷ୍ୟ ଶକ୍ତି ମନୁଷ୍ୟ ହେବେ  
ପାବେ, କ୍ଷୁଦ୍ର ଜୀବ ମାନୁଷ୍ୟ ନାମା ମାନୁଷ୍ୟ କରିତେ ପାବେ, ଦେବ ମାନୁଷ୍ୟ ଶ୍ରେଷ୍ଠ । ମନ  
ଓ ମନୁଷ୍ୟ ଦେବ ଏବ ମାନୁଷ୍ୟ, ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ ମାନୁଷ୍ୟ ଓ ଅପାଦିତ  
ମାନୁଷ୍ୟ ମାନୁଷ୍ୟ ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ, ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ  
କି ଆମା ମାନୁଷ୍ୟ ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ ଚାରିଦିନେ ମାନୁଷ୍ୟ, ନିରାମୀୟ



## জীবে দয়া ।

পাপগুলি বর্তমান দেখি তোরা শিল্পে ভাঙাত কি আমাদেব ছাড়া  
হওয়া মিলনীর ? না।

আমরা মাতৃব । আমবা শেখ । সৃষ্টিবই আমাদের বিকট আশ্রয়  
দয়া প্রার্থনা কবে । আমবা দেবত্বের পুত্র চবির সম্পদ পাইয়াছি । আম  
যদি সেই দেব আর্কীর্ষ পাঠ্যে, ভগবানের পের লাভ করিয়াও, শেখ  
সমস্ত জ্ঞান ঐশ্বর্য লাভ করিয়াও তাঁচাব মহিমা বৃদ্ধিতে পারিয়াও, সমস্ত জী  
মণ্ডলীক পতি আনাদিগব ঈশ্বরের বিধান অনুসার বেচেন হওয়া উচিত  
এইরূপ জ্ঞান পাঠ্যে যদি তাহার অপব্যবহাব করি, তাহা হইলে মনুষ্য চবির  
আর অধিক কি কলহ হইতে পারে ?

ঈশ্বর বেমন মাতৃবকে সৃজন কবিয়াছেন তেমন পিতা, পক্ষী কীট, পতঙ্গ  
বৃক্ষ, মতা সর্প মত স্তাবক মনুষ্যক সমস্ত বস্তুক সৃজন কবিয়াছেন  
আমরা বেমন বিধানের সৃষ্টিতে মূর্খে ও শাস্ত্রিত বাস ববিত্তে চাছি, আম  
বেমন সঙ্গপ্রকার আনন্দ প্রার্থনা কবি, ঐ সকল সৃষ্ট জীবও সেইরূপ সৃষ্  
পাঠি এবং আনন্দ প্রার্থনা করে । আমবা ঈশ্বরের বিকট বেমন স  
বিষয়ে অস্ত দাবী করিতে পারি অপর জীবও সেইরূপ দাবী কবিত্তে পারে  
আমবা জীবের মধ্যে শ্রেষ্ঠ অর্বাৎ প্রধান হইয়াও আমাদিগের হইতে নী  
জীবগুলি প্রতি কি অত্যাচারকরা উচিত ? আমরা প্রজা লাভ কবিয়াও ব  
পিতৃ হানাদি কার্যা কবিয়া থাকি তাহা হইলে উহাতে ঈশ্বরের প্রতি  
অত্যাচার করা হয় । কাবণ যে পুত্রের প্রতি অত্যাচার কবে সে পিতার প্রতি  
অত্যাচার কবে যে শত্রু পিতা ও পুত্র এক । পুত্রের প্রতি অত্যাচার কবি  
পিতারই মানের হানি করা হয় । তাহাতে আপনাব ও মর্যাদাব হানি  
কেনবা নিজের অবশ হইলে শাস্ত্রে পিতারই অবশ হইয়া থাকে ।

মাতৃবের বিকট হার্যবহার লাভ কবিয়া অপর জীব কত গুলি চপ জে  
কবিত্তে উল ঈশ্বরের অতিশ্রেষ্ঠ নশ । মাতৃবের দ্বয়ে যদি ঈশ্বর ভবি  
পাকে তাহা হইলে মাতৃব কখনও অস্ত জীবের প্রতি অত্যাচার কবিত্তে পারেন  
কেননা ভগবান নাশক পিতা । মাতৃব ও পিতৃ পক্ষী প্রভৃতি সকলেই তাঁহা  
বিকট মন্য । কাবণ তিনি কল্যাণকর এই জীব মণ্ডলীকে সৃজন  
কবিয়াছেন, এবং সঙ্গ বস্তুক তাঁচাব পের লাভ কবিয়া দত্ত হইয়াছে । তিনি

শ্রোতব্যক জীবের শব্দে বাস করিতেছেন। তিনি সৃষ্টির অল্প পরমাণুতে  
 শুচশ্রোত ভাবে মিশিয়া বসিয়াছেন। সেই পরম কারিতিক পরম পিতা  
 পরমেশ্বর, যেই চক্ষে মানুষকে দর্শন করেন সেই চক্ষে অল্প জীবকণ্ড দর্শন  
 করেন। তাঁহার নিকট বৈকল্য নাই। ভো নাট। - তাঁহার বংশন, মানুষ  
 ও পশু গণী ঈশ্বরর সৃষ্টিতে এক সমান করণার পাত্র নহে, তাহাদের ঐ  
 অশ্রদ্ধে কথ্য গুণিতও পাপ। তাহাদের ঐ বাক্য সর্বদা অবজ্ঞাব ঘোষ্য।  
 কারণ সর্বত্র সর্ববশী, সর্ব জীব অর্থাৎ বাসন দেশ কাল পাত্র ভেদ বহিত  
 হইয়া পরিপূর্ণ ও বহানু, তিনি কখনও স কীর্ত্যচতা ও নীচ বাসনা লুক্ক  
 মানবের স্তায়, স্বার্থপর ও নীচ নহেন।

সৃষ্টি তাঁহার অর্থাৎ ঈশ্বরের অভিব্যক্তি বা প্রকাশ। সকল জীবই  
 তাঁহার নিকট সমান। তিনি মত্তা স্বরূপ এবং মৎ দ্বারা সমগ্র ব্রহ্মাণ্ড সৃজন  
 কবিয়াছেন। আমরা মানুষ, তাহা যদি বুঝিত না পাবিরা, কেবল মনে করি,  
 আমরাই হৌব সর্বোত্তম নশা শ্রেষ্ঠ এবং অত্র জীবগুলির প্রতি আমাদের  
 বখেই ব্যবহার করিবার ক্রমতা আছে, তাহা হইলে নি চর জানিও ঐ দারুণ  
 আনাবেব তুল। আমরা স্বার্থীক হইয়া, অজ্ঞানী হইয়া ঐ রূপ ধারণা করি।  
 উহা উহা কি দাষ্টি। কেন না ঈশ্বর বখন আমাদেরকে সৃজন কবিয়াছেন  
 তখন সকল জীবই তাঁহার সৃজিত বলিয়া সকলের প্রতি আমাদের  
 করুণা করা উচিত। যেহেতু আমরাও যে ঈশ্বরের করুণা প্রার্থনা  
 কবি। সকলেই ঈশ্বরের নিকট করুণা প্রার্থনা করিতে পার। মানুষ  
 বিধাতার বিধান অনুযায়ী সকল জীবের প্রতি মেহবান ও প্রেমশীল  
 হইতে বাধ্য।

আমরা প্রতি পদে পদে অগাও আমাদের শ্রেষ্ঠ প্রািপাদন করিও  
 চাহি কিন্তু যদি আমরা অত্র জীবের প্রতি হি সা করি, অপর জীবকে অপ্রায়  
 রূপে ব্যতিযাত্ত করিয়া তুনি জননাদি দ্বারা নষ্ট কবি কিবা আমাদের উৎপীড়নে  
 জীব মরান অতির হইয়া পড়ে, তাহা হইলে আমাদের জ্ঞান বিদ্যা লাভে  
 লাভ কি ? জ্ঞানের মর্ম কি ? যে বস্তু দ্বারা জীব ঈশ্বরের মুখীন হয় অর্থাৎ  
 ঈশ্বরকে লাভ করিতে পারে, উহাই জ্ঞান। উহা ব্যতীত আর সকলি ও  
 অজ্ঞান। আমাদের মনুষ্য সৃষ্টিতেও জ্ঞান ধারণি পরিষ্কট হইয়া থাকে।

তখন পর্যন্ত মানুষ স্বপ্ন জে ৩ চৌবেব প্রতি যে গাচার কার্যে  
 যাত্রা মাপন ভগবানের প্রেম লাভ করিত পারিত না। অতএব ইশা  
 নীক'বা মোনাহু' শ্রী ৩ স. ১ কিত্ব অত্র চৌবেব প্রতি যে পথাত্ত না দয়া হু  
 এই পথাত্ত মানুষ প্রেম নতে।

## হিংসা।

হনন শব্দ চট্ট এই নি সার উ পত্তি। অপবকে হনন বা নাশ করণ  
 হি সা। যে এই হিংসাকে আশ্রয় করিয়া জীবন্তিগ'ব যে কোন ভাবেই হি সা  
 করে, সে জীবন্তিগ'র পাশে দিত্ব হয়। হি হুক মনও শে'ন লাভ করিতে  
 না। অত্বে যখন বিমণ চক্রভ্যাগি দশন করিতে পাবে না সেইরূপ যাহা  
 শূন্যে হি সা রহিয়াছে সেও কখনও ভগবানের দরলাভ করিতে পাবে না।  
 হি সা'র চিত্ব দু'খিত হয়। এতএব ত্রুখিত হি'র শে'বের পূজা করিতে যাওয়া  
 করে ত্বে'ন শূন্য চালা এক' বধা। পুকেই রহিয়াছি যে মা'ব পুত্রের প্রি  
 হি সা করিয়া যদি পি'ব বিয়াসভাজন হইতে চা'ন হি'নি হু'কের মূল কাটিয়া  
 অগ্রভাগে ছল শেচন করেন।

হি সা ধর্ম'কার্য'র অস্তরায়। আমান'ধ সমস্ত শাস্তি এ ব'ধা এক বাক্য  
 স্বীকার করেন। বিশেষ নাম কোধ, শোভাদি রিপুকে মনন করিতে না  
 পারিলে কেহ' শে'বের কপালাভ করিতে পাবেন না। এ অগ্ৰতে আশিয়া  
 শে'বের অশু'গ'হ শাস্তিময় জীবন শপন করিয়া স সায়ে'ন স্ব'ব'য় করাই  
 মা'গ'দের অস্তিপ্রায় কিত্ব চ'ব'য়ে যদি শ'ক'না হি সা'দি শে'ব'ণ থাকে তা'গ হট'গে  
 মা'গ'হ ব'খনও স সা'রে গু'থ পা'য় না। একটা আশ্র বিবেচনাও ও মা'গ'দের  
 হ'গ' উচিত ৭ পত্রে ও মা'গ'বে তা'গ কি ৭ মা'গ'ব'র বি ব'চনা শক্তি আছে,  
 পত্রে এ'হা না'হ। মানবাও যদি সেই বিবেচনা শূ'ন হ'হ'য় চ'ক'ণ ও অশ'হার  
 জীব'গ'পি ক'ধ'রি'ল নিধন করি এবং পত্রে'গ'সি'য়ে হি সা' ব'বি'য়া বৃ'নি'র পরিচ'য়  
 প্র'ব'ান করি তা'গ হইলে, তা'গ কি আম'গ' না'হ'। না'হ'ব'ের গ'গ'ব' পরিচ'য় হয়।

আমরা আর্থা জানি। আ'ব'রা সক'ল জীব' ত'গ'ত আপ'না'দ'ব প্রে'ম'ব'ের  
 ছ'ত্র ধ'রা করি কিত্ব আম'দ'ব চিত্ত যদি শূ'ন ও মনু'ব'াদি'ল পূ'র্ব হয়, তা'গ  
 হইলে আম'দি'গ'ের স'তি শ'ব' কি 'বাং ধ'াক' ?

২৬ই ৬ খের বিষয় যে আমবা সত্য সত্যই অতিশয় শোচনীয় অবস্থায় আসিয়া পড়িয়াছি। হিন্দু জাতিই ধর্ম দ্বারা অগতে শ্রেষ্ঠ ছিল। সপ্তদশী যুগে, সর্বদীর্ঘে ক্ষমা হইতে হিন্দু জাতির কৃপণ ছিল, এই হিন্দু জাতি আবহমান কাল অপনাদের দশ দাক্ষিণ্যের ভিত্তিতে অগতে শ্রেষ্ঠ হইয়া প্রহিষাছিল, আম সেই হিন্দুজাতি—আমরা সমস্ত ধর্ম হারায়াছি কি শোচনীয়ই হইয়াছি। হিংসা হেব এখন আমাদের চিন্তেব অলঙ্কার। আমরা নিম্নত নিম্নতীয় পণ্ডবধ প্রচলিত পাপকার্য দ্বারা এতটা অধ পাত্তে বাইতেছি যে প্রাচীন হিন্দুদিগে র নামেও কলঙ্কাকাণ্ড করিতে আমরা পশ্চাৎপন্ন নহি—কেন না অপবিত্র শাস্ত্রার্থ করিয়া আমরা আজ শাস্ত্র বাধ্যও কল্পিত করিতে চেষ্টা কবিতেছি। আমরা কান্দনাশদায় অন্ধ হইয়াছি। নিম্নার কাল করিতে বৃত্তি হইতেছি না। দিন দিন পাণের পথ অগ্রসর হইতেছি। এই শোচনীয় অবস্থায় অত্নে আমাদের শাস্ত্রিত হওয়া উচিত নহে কি ?

## হিংসা কেন কবি ?

আমরা পণ্ডবধ করি হুধু ধর্মের ভিত্তি। আমরা পণ্ডবলিকে অতি উপাদেয় বোধে অতি তৃপ্তির সন্নিভ ভরুণ করি, অল্ট ভাবি না এই পণ্ডবধ ও নানাসংগে কোন স্কা নাই। যে রক্ত, মা স, মদ্য অতি দ্বারা আমাদের মাতৃস্বর স্বে পঠিত, সেই রক্ত মা স, মদ্য, অতি দ্বারা পণ্ডবধও গঠিত। যে পণ্ডবধ ও বনদ্বীর রক্ত ও বীর্ষ্য হইতে যোন সন্নিগনে মাতৃস্ব উপপন্ন হয়, অপর পণ্ডবধ পক্ষীও সেই প্রকারে উপপন্ন হয়। এই রক্ত ও বীর্ষ্যের পরিমাণই ভীবেদেহ। যে বীর্ষ্য ও রক্ত হইতে আমরা উপপন্ন, তাহাই আমরা মাতৃস্ব সন্নিভ ভরণ করি। কি হুণা। কি হুণা। এই পণ্ডবধ না সওপি ভরণ করিবার অত্নে আমরা পণ্ডবধকে হনন কবি। এক শাস্ত্রাঙ্গিক এমন কি দেশস্বার নিকটও বলি প্রদান কবিয়া থাকি। পণ্ডবলির একমাত্র কারণই হইতেছে পণ্ডবধ মাতৃস্ব ভরণ। এখা বেধিতে চেষ্টা করিব যে এই মাতৃস্বের জায় সম উপকরণে নিশ্চিত পণ্ডবধ ভরণ কবিয়া আমরা কি রাস্তাস্বস্তিব পরিচয় দিষ্টে না ? সি হ ব্যাখ্যাকি ভরণের বুদ্ধি বিবচনা নাই তিব্ব বুদ্ধি বিবচনাগামী আমরা যদি তাহাদের মতন পণ্ডবধ হনন করি তাহা হি স পণ্ডবধ ও আমাঙ্গিগেত কি পার্থক্য আছে

জীবে দয়া।

## হিন্দু ও অপব জাতি ।

হিন্দুগণ প্রাচীনকাল হইতেই জীবহি সা যে পাপ ও অহি সাই পরম ধর্ম  
তাশ মানিয়া আসিয়াছে। কিন্তু অধুনা তন হিন্দুবা তাহা মানেন না এবং  
পবিত্র স্বর্গভূমি দু'টি “ভাবতভূমিতে” জন্মগ্রহণ করিয়া জীবের প্রতি  
অবশ্য কর্তব্য ধর্ম, তাহা পরিত্যাগ কবিত্তেছে অথচ যে সকল পাশ্চাত্য জাতিতে  
অনেক হিন্দু আছেন, বাহা বা দুগা করেন, সেই পাশ্চাত্য দেশের কো  
কোটি ব্যক্তি সেই হি সা ও পতববাদি নিবাবণের জ্ঞাত হবর মন উৎস  
করিতেছেন।

হিন্দুগণের নিকট জীবহি সা সধর্মক আর কি নূতন কথা বলি  
আমাদের প্রতি ধর্মকাণ্ডই হি সা বহিত সম্পন্ন করিবার উপদেশ বহিয়া  
তবুও আমবা পাশে হতজ্ঞান হস্তীনা আর্থা ব শবে হস্তীনাও পত্ত হননু করি আ  
ঐ পাশ্চাত্য দেশবাসীগণ — যে দেশের মনিষীগণ পুন পুন জীবহি সা নিষে  
করিয়া গিয়াছেন; সেই পবিত্র ভূমি ভারতবর্ষে জন্মগ্রহণ কবিয়া আম  
বাহা বা পতবধ কবি, তাহারিগের ধর্মকে উপহাস কবিত্তে বরিত্তেই যে  
পাশ্চাত্য দেশবাসীগণ ঘাস পতবধ নিবাবণ ও পতবধ নিবাবণের জ্ঞাত ক  
প্রফর করিতেছেন। পাশ্চাত্য দেশে ৮ইকত কত গ্রন্থ, কত সভা সমিতি এ  
কত আইনও প্রচলন হইয়াছে।

আমাদের দেশের বৈষ্ণব সাধুগণ, শৈবগণ ও ধর্মপ্রাণ জৈনগণও এ  
নিন্দনীর পতবধ নিবারণের জ্ঞাত অনেকে প্রয়াসী হইয়াছেন। জীবহি  
নিবাবণের জ্ঞাত তৈন ধর্মাবলম্বী মহাত্মগণ বিশেষরূপে চেষ্টা করিতেছেন  
তাগাদের এই উত্তো। আরোজন আমরা সর্ব্বদা প্রণ সা করি। ধর্মশাস্ত্রে জী  
হি সা যে নিন্দনীর, তাহা পুন পুন বলিয়া গিয়াছে। অল্পত আমরা বাগা  
সঙ্গপ্রকার ধর্ম্মাচার বিধি মাত্র করিলেও কিন্তু আমাদের বাগাচার হিন্দু সমাজে  
জীবহি সা অতিশয় বেশী। আমরা শত্রু। অধিকাংশ বাঙ্গালীই মা  
উপাসক। অথচ আমরা বাঙ্গালীই বেশী জীকক হননু করি এবং পতমা  
ভকত কবি। আমাদেরই উচিত সকাগ্রে জীবহি সা ত্যাগ কবা। মহাত্ম  
চৈতন্য, ভগবান রামকৃষ্ণ প্রভৃতি মহাত্মগণ আমাদের দেশে জন্মগ্রহণ কবি

আমাদিগকে পবিত্র কবিতা গিয়াছেন, আমরা সেই সকল মহাশয়-  
দিগের উপদেশানুসারে চলিয়া পশুমাংস ভক্ষণাদি ত্যাগ করা উচিত মনে  
করি না ।

## পশুব সহিত আমাদের সম্বন্ধ ।

- পূর্বেই বলিয়াছি, ঈশ্বর যেমন আমাদের স্বজন করিয়াছেন, তেমন  
পশুগণকেও স্বজন করিয়াছেন । একমাত্র পরমপিতা পবনেশ্বরই সকলের  
স্রষ্টা ও গিতা । তাঁহার এই সৃষ্টি কত সুন্দর । তিনি সকল জীবের উপাশ্রয়  
ও মুক্তিদাতা ভগবান । সকল জীবই সেই পবন দয়াময় ভগবানকে লাভ  
কবিবাই জন্ম নিত্য তাঁহাকেই ডাকিতেছে । তিনি প্রেমময় এবং পবিত্র ।  
আমরা তাবত জীবনগুণী তাঁহা চাইতেই সৃষ্ট হইয়া তাঁহারই মহিমা স্মরণ করা  
উচিত এবং পবনস্বয়ং হি সা দেব রহিত হইয়া ভগবানের মহিমা কীর্তন কবাই  
কষ্টব্য ।

যখন আমরা সমগ্র জীবনগুণী সহিত সৌন্দর্যস্থাপন করিয়া, একই শ্রীতি  
বন্ধনে আবদ্ধ হইয়া জগতকে সুখময় ও শান্তিময় কবিতো পারি, তখন কেন আমরা  
যাঁহার সহিত আমাদের এত ধর্ম সম্বন্ধ রহিয়াছে সেই ঈশ্বর সৃষ্ট জীবগুলিকে  
তনু করিয়া নিজেদের পাপলিপ্সাব চরিতার্থ করি । এ পাপ কেন কবি ?  
এইরূপ কলুষস্পর্শে কি আমাদের নিজস্বদেব অনিষ্ট করি না ?

তিনি যে চক্ষে মানবকে দর্শন করেন সেই চক্ষে পশু পক্ষীগণকেও দর্শন  
করেন, তাঁহার বিধানে সমস্তই সমান স্নেহের পাত্র ।

পরম দয়াময় ভগবান নানা জীব পরিপূর্ণ এই সৃষ্টিকে আনন্দময় স্বর্গ বলিয়া  
করিবাই স্বজন করিয়াছেন এবং এই চেতন জীবের জন্ম নানা প্রাণের ঔষধী ও  
ফল ফুল আদিও স্বজন করিয়াছেন । পিপাসা শান্তিব জন্ম জন্মও সৃষ্টি  
করিয়াছেন তবুও আমরা এত ঔষধী ফল ফুল ও সৃষ্টি জলাদি প্রাপ্ত হওয়া  
সবেও কেন যে আমাদের মতন রক্ত মাংসের পশুদের ভোজনের জন্ম এত  
শালাঘিত হই তাহা বুঝি না । পূর্বেই বলিয়াছি, পশু মাংস ও আমাদের মানব  
দেহের মাংস কোনও পার্থক্য নাই তবুও আমরা ঐ রক্ত মাংসের দেহই

ভোজন করিবার ক্ষমতা বড়ই ব্যস্ত হইয়া উঠি। তার! হাঃ! পশুও পি অজ্ঞানী, আত্মবশ্যার ক্ষমতা সম্পূর্ণ অপার।। এব হি স মানববৃন্দের হস্ত হইতে উদ্ধার পাইবার ক্ষমতা উপায়হীন। ঐ অজ্ঞানী পশুগুলিকে হত্যা করিতে আমরা কতই না কৌশলজ্ঞান বিস্তার করি। আমরা বড়ই চতুর ও কৌশলী এব হি স। আমরা আমাদেরিগেব হইতে দুর্গম জন্মদিককে ধরিয়া ভোজন করি। কি পবিত্রাণ' কি দুঃ' এই ব্রহ্মসময় দেহ ভোজন কবিত্তে আমরা কিছুনাত্র দুঃ কবি না।—কি লজ্জা'।

## আয়ুৰ্ণ আবশ্যিক ।

আমরা মাতৃব দীর্ঘ জীবন ও সুস্থ দেহ প্রার্থনা করি।—আমাদের সকল কর্ম ও ধর্মের মূলেই প্রার্থনা ও চেষ্টা যেন আমরা নিবাসন দেহ লইয়া জ্ঞানক দিন শান্তিতে জগতে বাস করিতে পারি। ধর্ম যদি মাত্র করি তাহা হইলে পশু প্রকৃতিতে বধ করা আমরা কিছুতেই সক্ষম বলিয়া মনে করিতে পারি না। এব ইহাও স্বীকার করিব যে পশু বলি পাপ। তার পর যদি দীর্ঘ জীবন চাহি, শান্তিময় জীবন চাহি তাহা হইলেও অণব জীবের প্রতি আমাদের মন্বানু হওয়া উচিত। অপরের জীবন নষ্ট করিয়া বাহারা নিজের জীবন বাড়াইতে চাহে, তাহারা জানে না যে তাহাদের নিজের জীবনই ক্ষয় করিতেছে। আয়ু মাতৃবের চির বাসনাব জিনিব। নিবোগ শক্তিবর ক্ষমতা মাতৃব প্রতি নিয়ত স্ত চেষ্টা করিতেছে। কিন্তু পূর্বেকার আমাদের আদিপুরুষগণের মতন আমরা কেন তত নিবাসন দেহ লইয়া দীর্ঘ জীবন পাঁচিতে পারি না? তাহা একমাত্র কারণ, আমরা আহাৰে বিহারে নিতান্ত যথেষ্টাচারী হইয়া পড়িয়াছি এব পশুবাধি কার্যে বা আয়ুক্ষর করিতছি।

যা সত্বপে শরীরে বহু রোগ আসে এব না স জন্ম জন্মিত রোগে আয়ুক্ষর হব। আমাদের উচিত সনগ্র জীবকে ভাগবাসা। পশু হননাদি পবিত্রা। করা এব যাহাতে পবিত্র জন্মশান্ত কবিতা স্নেহের প্রেম পাইতে পারি, তাহা করা। যদি নিবাসন দেহ চাহি ও তাবৎকপা লাভ করিতে ইচ্ছা করি, তাহা হইলেও বহী না ত্যাগ করা আমাদের উচিত।

## পশুবধে প্রায়শ্চিত্ত ।

শ্রীপার্কীভী ভগবান মহেশ্বরকে বলিতেছেন —

নদর্থে শিবকুর্স্বস্তি তামসা জীবঘাতনং ।

আকল্প কোটী-নিরয়ে তেযাং বাসো-ন সংশয়ঃ ॥৫

\* \* \* \* \*

যো গোহাশানসৈ দেহি-হত্যা কুর্যাৎ সৃদাশিব ।

একবিংশতি বৃদ্ধশ্চ ততদেবানিষু জায়তে ॥৮

যজ্ঞে যজ্ঞে পশূন্ হত্বা কুর্যাৎ শোণিতকর্দমং ।

স পচেন্নরকে তাবদ্ যাবলোমানি তস্যাবৈ ॥৮

শ্রীমদ্ভাগবত উত্তরাখণ্ড — ১ ৪৫ অব্যায় ।

মহেশ্বর পার্কীভীকে ভিজ্ঞাসা করিয়াছিলেন—‘শিবে ওই মঙ্গলময়ী হুর্গে, সকল জীবই ত বিষ্ণুময় ও তোমার ভক্ত তথাচ মানবেরা কামনা করিয়া তোমার উদ্দেশে জীবহত্যা করে তনিয়াছি—এ কিরূপ’ পার্কীভী তদুত্তরে বলিয়াছেন —  
‘হে মঙ্গলময়ী’ যে সকল মানব তমবশে আমার উদ্দেশে জীবঘাত করিয়া থাকে, তাহারা আকল্প কোটি নরকে বাস করে, তবিস্য ন শয় নাই। হে সৃদাশিব’ মোহ বশত যে মানব মনে মনে দেহবিশিষ্ট পশুর হত্যা করণা করে, এক বিপত্তিবার তাহাকে সেট সেই পশুদ্ব্যানিতে জন্মগ্রহণ করিতে হয়। নানা যজ্ঞে পশুহত্যা করিয়া যে ব্যক্তি শোণিত কর্দম করে, পশুর গোম স শ্যা বৃত্ত তত বৎসর সে নরকে পড়িয়া পড়িয়া থাকে ।

হিন্দুধর্মের বে সকল লক্ষণ নির্দেশ আছে তাহাতে শৃষ্টই রচিতরাছ অহিংসা ও দয়া দণবিধ ধর্মের অন্ততন। একমাত্র অহিংসা দ্বারাই ত্রিলোক জয় করা যায়। তিনি সর্বজীব হইতেই শ্রদ্ধা ও অতয় পাইয়া থাকেন, বাহার হৃদয়ে বিন্দুমাত্রও হিংসা নাই।

আমাদের দেশের ঋষি তপস্বীগণ আজ যাহাদের নামে আনন্দা ৌরবাহিত তাঁহারা সকলেই ফলশূন্যহারী অহিংসক তাপস ছিলেন। বেদীধামজন্ত, লক্ষণ,



## সাধাবণ বিবেচনা।

কোন ব্যক্তি যদি তোমার আঘাত করে তোমার বন্ধন করিয়া যাই তাহাতে তোমার কি কষ্ট হয়, তাহা তুমি জানি ত? সেইরূপ অপর অন্য কষ্টকেও কেহ বন্ধন করিয়া রাখিলে কেহ বা আঘাত করিলে তাহাদিগকে স্মরণ কষ্ট হয়। তুমি মাগুব ব্যাধান্ত কষ্ট পায়, অশ্রুও বধন তাহান্ত কে পায় তখন তোমার সাধা করা উচিত কি?

বসু রমণীশ্বর। শোখালিগব নিকটও আমার নিশ্চয়ন তোমরা বিবেচনা করিয়া দেখ তোমরা দশ মাস দশ দিন সন্তান গর্ভে ধারণ করিয়া কষ্ট পায় তাহাও সেই সন্তান জন্মিষ্ট হইলে তাহার মর্শনে ও গাত্রস্পর্শ কষ্ট আনন্নিতা হইবে। মনে রাখিও তোমাদের মতন অপর শ্রীবও স্মের্নি দশ মাস দশ দিন সন্তান গর্ভে ধারণ করে এব তুমিষ্ট হইলে তোমাদের মতন সন্তান হইবে করে, তোমাদের মতন সুখী শ্রী অতএব তোমাদের উচিত কি, চাণ্ডিশ্রিত ক বলি নিতে কেওরা। তোমরা বৎস সন্তানের শেহ শোমনা জনে মা। তোমাদিগকেই বশিষ্ট হইবে। তোমরা সন্তানের না হইয়া অপরের সন্তানকে কি করিয়া হস্তা করাও। তুমি যেমন তোমার সন্তানটীর কল্যাণ কামনা কর তেমনি অশ্রুও ত তোমার সন্তানটীর কল্যাণ কামনা করে। অশ্রুও জননীশ্বর নিজেই সন্তানের মুখ পাম চাহিয়া বুক হাস বিদ্যা বণ দেখি, অশ্রুও সন্তানকে দারা উচিত কি মনস্তপ্তিও জানিবে তাহাই তাহারা আনন্দ ফেরন ভাবে জগে বিচরণ করে। অশ্রু আমাদের উচিত কি তাহাদের প্রাণ হানি করা? হে জননিগণ 'আমরা তোমার মতন ঐ সকল প্রাণীরও ত প্রাণ রহিয়াছে, অতএব নিজেই বিচারা করিয়া দেখ, তাহাদিগকে বধ করা আনন্দজনক উচিত হয় না। তুমি তোমার সন্তানটীকে যেমন কাশরও নিকট বসিতে দিতে চাহ না নিশ্চয় জানিবে, অশ্রুও জননী ভগবতীও স্মের্ন তাহাদের নিকট, তাহাদের আশ্রয় সন্তান বলি নিতে পারেন না।

নিশ্চয় মনে রাখিও যদি আমাদের কল্যাণ চাহ তাহা হইলে কখনও কখনও প্রাণ নাশ করিয়া আশ্রয় কল্যাণ লাভ করিতে পারিব না। সর্বভীত জনসমূহ তাহাই একমাত্র আশ্রয় কল্যাণ লাভের পথ।

## পশুমাংস খাদ্য ।

পশুমাংস ভোজন করিতে আমাদের ঘৃণা হয় না । আমরা একবার ভাবিয়াও  
দিনি না যে ঐ পশুদেহ ও আমাদের দেহে কোন পার্থক্য নাই । মানবদেহেব  
দ্বিতীয় উপকরণে পশু দেহ নির্মিত হইয়াছে । অর্থাৎ, আমরা সেই  
পশুদেহই ভক্ষণ করিতে চাই । মাংসখণ্ডি মরিয়াগেলে মড়া বলিয়া অপবিত্র  
বোধে ভাষাকে আমরা স্পর্শ পর্যন্তও করি না । যেখানে মৃতদেহটা থাকে  
সেখানে গঙ্গাজল গোবরছড়া দিগা থাকি, কিন্তু ছালা, স্নেহ প্রভৃতিব মৃত-  
দেহটাকে চামড়া ছাড়িয়া কেমন উপায়ে বোধে আহার করি । মৃতদেহটাকে  
ভোজন করিতে আমাদের ঘৃণাও হয় না ।

নামবও পশু । মানব দ্বিপদ পশু । ছাগল ভেড়া প্রকৃতি চতুষ্পদ এম  
নং প্রাদি পদবিনী পশু । পশু আর কিছুই নহে জীবদেহ মানভেদ মাত্র ।  
কিন্তু মাংস ও পশু পক্ষীর ভেদ একই বস্তু । আমাদের উনকে যেমন পাকস্থলী  
আছে মৃতকোষের মূত্র আছে মলাধাৰে মল আছে, আমাদের দেহ যেমন  
বায়ু শিশু কথানিতে ভষিত পশুদেহেও ঠিক অবিকৃত ভাষাই রহিয়াছে ।  
এপচ যে মানবদেহকে অপবিত্র বলিয়া জাগ কবি, সেই মানবদেহেব মতন  
মপব জীবের দেহকে পবম পবিত্র বলিয়া ভক্ষণ কবি । কি পিশাচ বুদ্ধি ।  
কি পবিত্রাণেব বিষয় ।।

এই বিষয় ব্যাখ্যা কবিলে আমরা অনেক ব্যাখ্যা কবিতে পারি । এমন  
অনেক কল্পনা জীব আছেন যাচার মন করেন বলি বুঝি পূজাব উপকরণ ।  
চৈতন্য শক্তিসম্পন্ন জীবকে চৈতন্যেব আধার ভগবানেব অংশ বা স্বরূপই মনে  
কবা উচিত । কিন্তু চৈতন্যশালী জীবকে নিধন কবিলে আমরা জনদীর্ঘবেব  
রূপা ভীষা কবি । কখনও তিনি কাহাকেও রূপাদান করিতে পাবে না ।

আমরা যাহাদিকে ধর্ম ও সমাজগত হিসাবে বিভিন্ন মনে কবি পূর্বেই  
বলিয়াছি, সেই না সভাজী পাশ্চাত্য জাতিব মধ্যে এমন লক্ষ লক্ষ লোক  
জীবিত সায়ে নিত্যই অধমকব এম জীবমাংস ভোজন যে নিত্যই ছুয়া তাহা  
স্বীকার করেন । সেইমত জীবের প্রতি মাংসেব অত্যাচার নিবারণেব মত  
বিলাতে শিউমেটেবিয়ান সোসাইটি, জীবে দয়া সভা, স্থাপিত হইয়াছে এম  
আনাদিগেব দেশেও পশুরেশ, নিবারণী সভা স্থাপিত হইয়াছে । সেইমত আট-৩

প্রদত্ত হইয়াছে। আমরা এখানে ইয়োহান্সের জাতি সকলের মধ্য এই বিস্তারিত আলোচনা চর্চিত্তে তাহা ব্যক্ত করিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ করিব।

দি গোল্ডেন এজ স্প্যান্ডক মি বিয়ার্ড এ সম্বন্ধে অনেকগুলি গ্রন্থ প্রচার করিয়াছেন। মি সেনবী সর্ট আপনাব এ্যানিম্যাল রাইট্‌স্ নামক গ্রন্থে প্রথমেই প্রস্তাব করেন যে পশুদিব কোন ক্ষমতা না দাবী আছে কি? তিনি বলেন—মাগুয়ের এখন সর্কবিষয়ে দাবী প্রাপ্ত হইতে পারে তখন পশুদিগেরও স্টেট দাবী করিবার ক্ষমতা আছে, কারণ সকলে এক টম্বর স্টেট।

আমরা মাগুয়ের দাবী দাতা লইয়াই সর্কিয়া ব্যক্ত কিন্তু পশুপুত্রিদিগকে অনবরত পীড়ন করিয়া এটা ব্যতিব্যস্ত করিয়া তুলিয়াছি যে তাহাতে সমগ্র পশুবৃন্দ আতুল হইয়া যে ভয়বানের নিকট দয়া ত্রিষ্টা করিতেছে না তাহা কে বলিল। জীবের বিস্ময় পশুর উপর অত্যাচার করিবার আমাদের কোন ক্ষমতা নাই।

প্রায় এম পাঁচাত্তাল সর্কদেশীর পত্রিত পত্র একবাক্যে পশুদিব নিবারণ করিয়া গিয়াছেন। বোধ সাধারণ এবং শিখাগোবিদ্যান পুস্তকচিত্রণ পুন পুন নিষেধ করিয়া গিয়াছেন যে 'not to kill or injure any innocent animal' জীবের প্রতি স্বেচ্ছানু রোমান্ দার্শনিকগণ সম্বন্ধে সেনেকা, পুটোক এবং পবলিবি প্রসিদ্ধ। ইয়োহান্সে ইচ্ছা বা মহুয়াকে জীবের প্রতি ব্যবহার করিতে পুন পুন উপদেশ দিয়া গিয়াছেন। ঐ সকল হাঙ্গাগণ এখনও জীবিত করিতেছেন না।

তৎপরে চতুর্বি শতাব্দী হইতে ৬৪ শতাব্দী পর্যন্ত মানবত্বের জীবগুলির প্রতি দয়া দাক্ষিণ্য দেখাশুনে মানবতা বিশেষ মনোযোগী হয় নাই। গত অষ্টাদশ শতাব্দীতে মাগুয়ের ভক্তির জ্ঞানের লাভ্য বাড়িয়া উঠে। এবং মানবত্বের জীবের প্রতি যে মাগুয়ের কর্তব্য আছে তাহা ভলটেয়ার এবং কলো ব্যক্ত করেন। ১৭৮০ খৃ অর্ধের বিপ্লবাত্মী বিপ্লবের সময় প্রথম মাগুয়ের গ্রামে জীবের প্রতি দয়াবিত্ত্বের নিষেধ প্রাপ্ত হয়। ভেবেমি বেনফান্দু বীর দয়াবিত্ত্ব বিশেষ পরিশ্রম করিবেন। ১৮১১ খৃ অর্ধে লড এবং বিন বিলাস-পত্রিকার পশুদিগের প্রতি দয়া দেখাইবার কথা উল্লেখ করিয়া এক স্থানীয়

বৃদ্ধতা করেন। কিন্তু ই মণ্ডর অসাধারণ সন্মানধোষ্ট টিটকারী দিয়া  
 এরফিনাক অগমানিত করে। ইহাব ঠিক ১১ বৎসর পবে, রিচার্ড মার্টিন  
 গণতন্ত্রের প্রতি দয়া প্রকাশ করিবাব চম্ব বৃদ্ধতা দিয়া জনসাধাবণকে মুক্ত  
 কাবন। ১৮২২ সালে ই মণ্ডে প্রথম "মার্টিন এক্ট" নামক পত্র প্রতি নিষ্ঠবতা  
 নিবাবক এক বিল পাশ হয়। বিচার্ড মার্টিন ঐ দিন হস্তকট ই মণ্ডে চিরশ্রমপীর  
 হইয়া পড়েন। ১৭৯৬ সনেও জন লবেস পত্র প্রতি "মহুয়ের কতবা" নামক  
 একখানি এই প্রণয়ন করেন। ১৮৬৩ খৃ অব্দে নবম্বর মাসেও দি রাষ্ট্রস্  
 অব্ মান এও, দি বেম্স অব্ ক্রেট্ন্ নামক একখানি গ্রন্থ প্রকাশিত হয়।

এটরূপ উল্লেখ করিতে ইচ্ছা হইলে আমরা বচ শ্রাব্ নাম উল্লেখ করিত  
 পারি এষ বহু দয়ালু ব্যক্তির নামেও তালিকাও প্রকাশ করিয়া শোবকে বিস্তৃত  
 করিতে পারি।

ইহা সত্য যে পত্র গ জানে বিজ্ঞানে উন্নত মানবের নিকট অধিক দয়া ও  
 অধিক কৃপা প্রার্থনা কবিতে পাবে।

ই.মণ্ডে প্রথমে ১৮২২ খৃ অব্দে পত্র দেশ নিবাবণি আইন পাশ হয়, তাহা  
 গুল্কেই বনিয়াছি। পত্রগুলি বনে ঘরলে বাস কবে। মাহুয়ের মচিত তাহাদিগে  
 কোন বিবাদ বিনশাব নাই। মাহুয়ের কোন বার্বে তাহার ব্যাঘাত উপস্থিত  
 করে না। মাহুবেব ছায় পত্রগণ, মাহুবেব সহায় সম্পদ স্ত্রীপুত্র হরণ করিয়া  
 মাহুকে আশাতন করে না। তবে মাহুয কি কারণে সেই নিবীহ পত্রকে ত্যক্ত  
 করিয়া তাহাদিগেব বিনাশ সাধন কবে? মাহুযই স্বত প্রবৃত্ত হইয়া পত্রগুলির  
 প্রতি প্রথম হি সা আবস্ত করে এষ পত্র মা স ভকণ করিয়া নিজেদের নীচ  
 বৃত্তির পরিচয় দান কবে। আশ্রয়ার্থে পত্রগুলিকও পরিশ্রম্ব তি শর  
 বশবর্তী হইতে হয়।

সাধারণ মাহুয ও পত্রাত অনেক ওফা-কিন্দ মাহুযগুলি আপনা তইতে  
 নিষ্ঠে ও জানতীন জাতিগণ পত্রদিগকে বেশ দিতে কিছুমাত্র দেশ স্বাকাব  
 করে না। পত্রব রক্ত মা সময় দেশ টিক বাটী ও পুৰাণ বক্ত ও বীর্ষ হইতে  
 উৎপন্ন মানবদেহের ছায় তাহা ভকণ করিয়া মাহুযগুলি দ্বা বোব করেন না।

আমরা দেখিব পত্রগুলি বস্তত আমাদের যেহেব পাশ কি না এষ  
 উশদিগকে বন করা আমাদের শর্তব্য কি না।

প্রভূত হৃৎকোষে। আমরা এইখানে ইয়োবোম্ব ঘাতি সকলের মাধ্য এই বিব হ কতটা সা সাগন চর্চাচ্ছে তাই ব্যক্ত করিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ করিব।

মি গোল্ডেন এক সম্পাদক মি বিয়ার্ট এ সম্বন্ধে অনেকগুলি গ্রন্থ প্রচার করিয়াছেন। মি হেন্দ্রী স চ আপনার এ্যানিমালা রাইটস্ নামক গ্রন্থে প্রথমেই প্রশ্ন করেন যে পশুদিগে কোন শ্রমতা বা দাবী আছে কি? তিনি বলেন—  
মানুষের শ্রম সর্ববিধে দাবী গ্রাহ্য হইতে পারে তখন পশুদিগেরও সেই দাবী করিবার শ্রমতা আছে কারণ সকলেই এক উদ্ভব সৃষ্ট।

আমরা মানুষের দাবী পাওনা লইয়াই সর্ব্বথা ব্যক্ত কিন্তু পশুপক্ষিদিগকে অনবহত পীড়ন করিয়া কষ্টা ব্যতিব্যস্ত করিয়া তুলিয়াছি যে তাহাতে সমগ্র পশুপক্ষি আকুল হইয়া গে। ভগবানের নিকট দয়া ভিক্ষা করিচ্ছো না? তাহা কে বলিল। জীবের সিংহ পশুর উপর অত্যাচার করিবার আমাদের কোন শ্রমতা নাই।

প্রাচ্যে পা গাভা সমসাময়িক পণ্ডিতগণে একবাক্যে পশুহি সা নিবারণ করিয়া গিয়াছেন। বোচ সাবু। এ পিথাগোরিয়ান পুরোহিতগণ পুন পুন নিবেদন করিয়া গিয়াছেন যে 'not to kill or injure any innocent animal' জীবের প্রতি শেধবান্ রোমিন্ দাননিকগণ উদ্দেশ্যে সেনেকা, পুটাক এবং পলিফি প্রসিদ্ধ। ইয়োবোম্ব হইয়া মনুষ্যকে জীবের প্রতি সা ব্যবহার করিতে পুন পুন উপদেশ দিয়া গিয়াছেন। ঐ মকল "হাঙ্গাগণ কখনও জীবহি সা করিতে না।

উপরে চতুর্থ শতাব্দী স্ত্রে ৬ষ্ঠ শতাব্দী পর্যন্ত মানবের জীবজন্তির প্রতি দয়া দাক্ষিণ্য দেখা গিয়াছে মানব। বিশ্ব মনোযোগী হইয়াছে। তি আগ্রাম শতাব্দীতে সাগরের ভেতরে জানের প্রাণ্য বাড়িয়া উঠে। এয় মানবের জীবের প্রতি যে মানুষের কঠোরা আছে তাই ভুলে যাবে এবং কতটা ব্যক্ত করেন। ১৭০১ খৃ অ যব বিপ্লবগামী বিপ্লবের সময় প্রথম মানুষের আগে জীব প্রতি দয়া বিধর বিশেষভাবে আশ্রিত হয়। কেবেসি বেন্থাম যীম দয়ার মত বিবেদ পদিক্রমিত করেন। ১৮১১ খৃ অ যব লুই এভিগিন বিলাতের লর্ড স্টার পশুদিগের প্রতি দয়া দেখাইবার কথা উল্লেখ করিয়া এক সুদীর্ঘ

বহুতা করেন। কিন্তু ইংলণ্ডেব জনসাধারণ সভান'বার্ট টিউংবার্ট বিরা  
 এরকিনাক অপমানিত করে। ইহার ঠিক ১১ বছর পরে, রিচার্ড মার্টিন  
 পণ্ডিতগণের প্রতি দয়া প্রকাশ করিবার জন্য বহুতা দিয়া জনসাধারণকে বুদ্ধ  
 করেন। ১৮২০ সালে ইংলণ্ডে প্রথম 'নার্টিন এন্ট' নামক পত্র প্রতি নিহুঁরশু  
 নিবারক এক বিল পাশ হয়। রিচার্ড মার্টিন ঐ দিন হঠাৎই ইংলণ্ডে চিন্দবণীর  
 হুঁইরা পড়েন। ১৭৯৬ সনের জন্ মরেন্স পত্রব প্রতি মাংসের কর্তব্য নয়  
 একখানি গ্রন্থ প্রণয়ন করেন। ১৮৬০ খৃ স্নাক নাথরব মাসও নি রাই  
 অবু ম্যান এও, মি বেম্‌স অবু ক্রটস্‌ নামক একখানি গ্রন্থ প্রকাশিত হয়।

এইরূপ উল্লেখ করিতে ইচ্ছা হইলে আমরা বহু গ্রন্থ নাম উল্লেখ করি  
 পারি এবং বহু দয়ালু ব্যক্তির নামও তালিকাও প্রকাশ করিয়া লোককে বিসি  
 করিতে পারি।

ইহা সত্য যে পশুগণ জ্ঞান বিজ্ঞানে উন্নত মানুসের নিকট অধিক  
 অধিক কৃপা প্রার্থনা করিতে পারে।

ইংলণ্ডে প্রথমে ১৮২২ খৃ স্নকে পশু রোগ নিবারণের আইন পাশ হয়।  
 পুঙ্কেই বলিয়াছি। পশুগুলি বনে অঙ্গলে বাস করে। নাম্বের সশিত প্রাণী  
 কোন বিবাদ বিলম্বার নাই। মাংসের কোন খাে হাগরা ব্যাবহিক  
 করে না। মাংসের ছাত্র পশু গণ, মাংসের স্ফার মঙ্গল হ্রীপুর্ক হুঁই  
 মাংসকে আলাতন করে না। তবে মাংস কি কারণে সেট নিহুঁই  
 করিয়া তাহারিগের বিনাশ সাধন করে? নাম্বই খত প্রেরণ  
 প্রতি প্রথম তি না আরম্ভ করে এবং পশু না ব ঢক ক  
 বৃত্তির পরিচর দান করে। মাংসের পশুগণকে  
 বধবর্তী হইতে হয়।

সাধারণ মানুষ ও পশুগণ অনেক উচ্চ  
 নিহুঁই ও জ্ঞানহীন জানিয়াও পশুগণকে রোগ  
 করে না। পশুগণ এক না সমর সেট ঠিক রন  
 উৎপন্ন মানবদেহের ছাত্র, তাগা ভদ্র কল্পি

আমরা লেখিব পশুগুলি বধত  
 উৎপাদকে বধ করা জানাসের কর্তব্য কি

আমরা একমাত্র খাদ্যের জন্তই পুত্র বধ কবি। অত্র কোন কাৰণে পত্নী হিন্দী কবি না। মা স ভক্ষণ মানব আপনাত আহারীর মধ্যে প্রধান উপায়ের বশিরা ধারণা করিয়া লক্ষ্য রাখি কিন্তু ঐ মা স আনার সোমাব দেহ যে উপকরণে নিশ্চিত হইয়াছে, সেই উপকরণেই যে নিশ্চিত হইয়াছে পূর্বেও তাহা বশিরাছি এবং পুনঃ বারও সেই কথা বলিতে বাধ্য বশিলাম।

এখন কথা চাইতেছে এই যে যদি মা স ভক্ষণের জন্তই আমরা পুত্র বধ কবি তাহা হইলে সেই মা স ভক্ষণ আনাদের উচিত কি না। কারণ মা স বিচার ছাড়া বিচার করিয়া দেখ কি চাইতে উপায় হইয়াছে এবং ঐ মা স নাশের পক্ষে উপকারী কি না। অনেক শোক আছে, তাহারা নানা শাস্ত্রের ধর্ম দিয়া মা স ভক্ষণ অস্বাভাবিক নহে তাহা প্রমাণ করিত চাছে। আয়ুর্বেদ গ্রন্থও নাসের পথ্য দেওয়ার কথা উক্ত আছে। কিন্তু বিজ্ঞানের দ্বারা প্রমাণ হইয়াছে যে মা স সঙ্গীতবিশেষে পুষ্টিব পক্ষে অসুস্থ নহে বরং অপকার জনক।—সবল দেশেব সকল মানসিবা ও সাধুরা প্রতি যুগই জাবহি সা নিবেদন করিয়া গিয়াছেন। খ্রীষ্টানের ধর্মশাস্ত্র বাইবেলেও আমবা এই বিবরণ জানক প্রমাণ পাইয়াছি।

Mathew The Apostle lived upon seeds, and hard shelled fruits and other vegetables, without touching flesh খ্রীষ্টান কনিউনিটীর প্রধান ব্যক্তি জেমস্ সফক্সও একলিসিয়েটিক ইতিহাসে জেমস্‌সিগাস গিবিয়াছেন 'James never ate animal food অগষ্টাইনও তাহাব গ্রন্থে লিখিয়াছেন 'James the brother of the Lord, lived upon seeds and vegetables never tasting flesh or wine খ্রীষ্টানের ব্রাহ্ম জেমস্ পন্য ও শাকশস্য আহার করিতেন। তিনি কখনও মা স বা মদ ব্যবহার করেন নাই।

বাপি ব লব নানা স্থানের বিবরণেতে মা স ভক্ষণ সম্বন্ধে অনেক বিবেচন্যক স বাদ পাওয়া যায়। বারট্রাম ম্যাকগার সাহসার গ্রন্থ এই বিষয়ের বহু দৃষ্টান্ত দেখাইয়াছেন। বিজ্ঞানীদের প্রধান প্রধান শিক্ষার মধ্যে টারটুলিয়ান বেসিল, ক্রোম্বল অলেকজান্দ্রিনাস হনু প্রাইসোপম জেরোনি অবিলেন মারকিয়ন, এবং কালিস্টোয়ী প্রভৃতি চিন্তামূলক কখনও মা স না স ভক্ষণ করেন নাই।

(নাথু লিখিত গ্রন্থ হোমিলির ৭২ ন্যা। ২২, ১ হইতে ১৪) আছে —

No streams of blood are among them, no butchering and cutting up of flesh, no dainty cookery, no heaviness of head Nor are there horrible smells of flesh meats among them, or disagreeable fumes from the kitchen No tumult or disturbance and wearisome, clamouring but bread and water If however they may desire to feast more sumptuously the sumptuousness consists in fruits and their pleasure in these is greater than at Royal tables ।

শ্রীষ্ট ভক্তদিগেব ভোজ সভার এই শুল্কব চিত্রটী কত স্থলর ।

আমাদের দেশেও বৈষ্ণব কি মৈত্র, বা বৌদ্ধ সমাজের লোকগণ এখন ভোজ সভার একত্রিত হর তখন দেখিতে পাঠিবেন —

সে স্থানে রক্ত স্রোত প্রবাহিত হর নাই, মংস্ত মা স বা জীবের হাড় নামে সে স্থানে বীভৎস আকার ধারণ কবে নাই । মা স সিঙ্কের দুর্গকে সে স্থানের বাধু হুধিত হর নাই, মৃত স্তম্বর হাড় কদালে সে স্থানে পাহাড় জমে নাই । কোন ঝড়ো নাই, বিবাদ নাই, আহারের স্তম্ভ কাচারও শোব উপস্থিত হর নাই । কেবল রটী, কেবল অল, কেবল তরি তবকারী ও সল । আরও দেখিতে পাঠিবেন এই সকল ভোজসভার মা সলোলুপ শকুনি, গৃধিনী, শিবা কুকুর আগমন কবে নাই । এখানে বৃক্ষপক হুস্বাহু বস ভাবে ভোগ্য থালা তলি পরিপূর্ণ রহিয়াছে ।

আমাদের প্রধান ধর্মগ্রন্থ বেদের প্রথম স্লোকেই রহিয়াছে অহিংসা পবম ধর্ম । যদি আমবা পশু বধাদিয়ারা সেই চি সা কাশট করিলাম তাহা চইলে কি প্রকারে বে ব্দ লাভ করিব তাহা জানি না ।

কি শাস্ত্র মুক্তি, কি সামাজিক আচার, অর্থাৎ আপন আপন স্বার্থবদ্ধ তার তর্ক কিছুবই ধারা উহা প্রতিপন্ন হর না যে মা স আহার আমাদের উচিত । তবে যাহারা শাস্ত্রের বা ধর্মের দোহাই দিয়া মংস্ত মাংসে আহারের মুক্তি দেখান তাহাদিগকে আমরা বে . কথা না বশিরা একনাজি জিজ্ঞাসা করিত



আমরা একমাত্র বাদ্যের মতই পত্র বণ কবি। অত্র কোন কারণে পত্র  
 ি না কবি না। মা স ভক্ষণ মানুষ আপনাত্মক আশ্রয়ী মাত্ম প্রধান উপায়ের  
 বলিয়া ধারণা করিয়া লক্ষ্যে কিত্ত এই মা স আনন্দভোগ্যে উপকরণ  
 নিশ্চিত ইচ্ছা সেই উপকরণেই যে নিশ্চিত হইয়াছে পূর্ণতা তাগ বলিয়াছি  
 এব পুন বারও সেই কথা বলিতে বাধ্য রহিলাম।

এখন ক। ইতেছে এট বে যদি মা স ভক্ষণের মতই আমরা পত্র বণ  
 কবি তাগ হইলে সেই মা স ভক্ষণ আমাদের উচিত কিনা। কারণ মা স  
 বিচার দ্বারা বিচার করিয়া দেখ কি হঠাৎ উ পত্র হইয়াছে এব এই মা স  
 মাতৃস্বপ্নে উপকারী কিনা। অনেক লোক আছে, তাহারা নানা শাস্ত্রের  
 বোহাই দিয়া মা স ভক্ষণ আনন্দিক নহে তাহা প্রমাণ করিতে চাহে।  
 আত্মবোধে গ্রাহ্যও মা সেব পথা দেওগাব কথা উক্ত আছে। কিন্তু বিশানের  
 দ্বারা প্রমাণ হইয়াছে যে মা স ভোগ্যে পুষ্টির পক্ষে অগ্রবুল নহে বর অপকার  
 জনক।—সকল দেশের সকল মনিষিণ ও সাবুরা প্রতি সুগই জীবিত মা নিবেদ  
 করিয়া গিয়াছেন। ঐষ্টানম স্বর্ণশাস্ত্র যাইবেলেও আমবা এই বিষয় অনেক  
 প্রমাণ পাইয়াছি।

Mathew The Apostle lived upon seeds and hard shelled  
 fruits and other vegetables without touching flesh ঐষ্টান  
 কনিউনিটাব প্রধান ব্যক্তি জেমস্ লঙ্কেষ্ট ও এক্সিসিয়েটিক্ ইতিহাসে  
 লিখিয়াছেন James never ate animal food অর্থাৎ ইনও তাহাব গ্রন্থে  
 লিখিয়াছেন যে James the brother of the Lord lived upon  
 seeds and vegetables never tasting flesh or wine' কিন্তু ঐষ্টাব  
 দ্বারা জেমস্ লঙ্কেষ্ট ও লাক্সম্বী আদ্যে করিতন। তিনি কখনও মা স বা  
 মন ব্যবহার করেন নাই।

বাস্তব লব নানা স্থানের বিবরণিতে মা স ভক্ষণ দ্বারা অনেক নিস্বপ্নচক  
 ল বাদ পাওগা বাস। পারট্রান ম্যাকগাট তাগার গ্রন্থে এই বিষয়ের বহু দৃষ্টান্ত  
 দেখাইয়াছেন। বিত্ত্রিষ্টাব প্রধান প্রধান শিবোর ম ধা টারট্রিগিয়ান, বেসিল,  
 ক্রেন্সেল আলেকজান্দ্রিনাস ছন প্রাইসোটেম জোবানি, অবিজেন, মারকিচন  
 এব কানিষ্ট্রিটাম প্রভৃতি চিহ্নাঙ্গলগণ কখনও মাত্র মা স ভক্ষণ করেন নাই।

streams of blood are among them, no butchering and stog up of flesh, no dainty cookery; no heaviness of food. Nor are there horrible smells of flesh meats among them, or disagreeable fumes from the kitchen. No tumult of disturbance and wearisome, clamouring but bread and water. If however, they may desire to feast more sumptuously the sumptuousness consists in fruits and their pleasure in these is greater than at Royal tables !

ইহ চরিত্রের ভোজ সত্বর এষ্ট সুন্দর চিত্রটি কত সুন্দর ।

অন্যদের মধ্যেও বৈষ্ণব কি জৈন, বা বৌদ্ধ সমাজের লোকগণ যখন ভোজ সাংস্কৃতিক হয় তখন দেখিতে পাঠিবেন —

যে স্থানে বৃক্ষ যোড় প্রবাহিত হয় নাই, মৎস্য না স বা জীবের হাড় মাসে যে স্থানে বীতলস আকার ধারণ করে নাই । মাংস সিল্কের ছর্গন্ধে সে স্থানের সুগন্ধি হয় নাই, সুত অল্প হাড় কড়ালে সে স্থানে পালাড জমে নাই । গন্ধ-রসনা নাই, বিবাল নাই, আহারের অল্প কাহাবও শোক উর্গর্ভিত হয় নাই । কেবল রস, কেবল অন্ন, কেবল ভবি ভবকারী ও জল । আরও কখনে শাইবেন এই সকল ভোজসভার না.সলোলুপ শকুনি, গৃধিনী, শিবা পুংগবদন করে নাই । এখানে বৃক্ষপল স্তম্ভাচ্ছ যল ভাবে ভোগ্য থালা বর্জ্য পূর্ণপূর্ণ বহিষ্কারে ।

অন্যদের প্রধান ধর্মগ্রন্থ বেদের প্রথম প্রকোকেই বহিষ্কারে অহিংসা গরম পূর্ণা বসি আনরা পত বধাদিদ্বারা সেই হি সা কাগাই করিলাম, তাহা হইলে বিক্রমে যে ধর্ম লাভ করিব তাহা জানি না ।

এই পুস্তকটি, কি সামাজিক আচার, অর্থাৎ অগ্নি অগ্নি বার্ষিক স্তায় এই কিছুই ধারা উহা প্রতিপন্ন হয় না যে মা স আহার আমাদের উচিত । অথবা শাস্ত্রের বা ধর্মের মোহাই দিয়া মৎস্য মাংস আহারের যুক্তি প্রদান করা বিপক্ষে আনরা বেঁট কথা না বলিয়া একমাত্র জিজ্ঞাসা করিতে

চাহে যে, যে দরময় গোমাকে ও আমাকে পত্রকে ও মানবে  
করিয়াছেন, তাহার হিসাবে, আমি ও তুমি, পত্র ও মানবে তিনি সত্য  
কোন পার্থক্য করিয়াছেন কি? তিনি পরম দয়ালু তিনি সঙ্গীভাবে সমত  
দরা করেন। অতএব আমরা যে কোন ধর্ম লাভ করিবার জন্য পত্র  
করি তাহা জানি না।

এখন মা স ভক্ষণ স্বাক্ষর হইবে একটা কথা বলিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ  
করিব।

পূর্বেই বলিয়াছি, ধর্মের দিক দিয়া দেখিতে গেলে, দেখা যায়, কো  
মতেই পত্রবৎ যুক্তিসিদ্ধ বলিয়া প্রচার করেন নাই।

বিজ্ঞানের হিসাবে দেখিতে গেলে দেখা যায় পত্রমা স ভক্ষণ দ্বারা আম  
উপকৃত না হইয়া বর অধিকতর অগুরুত হইয়া থাকি?

বাহারা দীর্ঘজীবন লাভ করিতে চাহেন এম স বল ও নিরোগ হইতে ইচ্ছা  
করেন তাহারা ইচ্ছা বেশ মনে রাখিবেন যে ক্রিতি অপু তেম মর্য ব্যো  
হইতে কীবদেহ সৃষ্টি হইয়াছে। ঐ সকল জীবদেহ বায়ু পিত্ত কফ সম্বন্ধে  
গঠিত হইবে বিন্দু হয়। পত্রমা স ভক্ষণ দ্বারা ঐ সকল বায়ু পিত্ত কফ  
আশ্রিত জীবদেহই আমরা ভক্ষণ করিয়া তাহার দোষগুণ শরীরে গ্রহণ করি  
বায়ু পিত্তের বিকৃতি না হইলে জীব কখনও মরে না এম সৃষ্টদেহের মা সগুলি  
অতিশয় দুর্বল ও বিস্বাসযুক্ত হয় অতএব ঐ বায়ু পিত্ত কফাদি দোষগুণ  
ভক্ষণ করিতে কি আমাদের দ্বারা হওয়া উচিত নহে?

মাংস ও মস্তাদি ভক্ষণ দ্বাৰাই মানুষের তেজের রো। অত্যন্ত বাড়ি  
গিয়াছে। প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য সকল মনিষীগণেই এই মত। আমরা মানুষ  
দ্বারা নাশক গ্রন্থে তাহা ব্যাখ্যা করিব।

পা চাত্য ভাষ্কারগণের মাধ্যমে গিন্দনী সাহেব বলেন একমাত্র মাত্র মা  
ভক্ষণেব অল্পই মানুষের মধ্যে অনেক কঠিন রোগ উপস্থিত হয়। নি বিয়া  
বৎস মাংস ভক্ষণের অপকারিতা প্রমাণ করিতে প্রয়াসী হইয়া অনেকগুলি  
নিষাধিগামী ব্যক্তির পুষ্টতা দেখান। তিনি আপনার কাগজে একাধি বঙ্গদেশ

এই বর্ষের প্রকাশ করেন। ঐ বছর ৩২ বাবটী ব সব কখনও মৃত্যু  
 বর্ষে লক্ষ্য করেন নাই। এব একদিনের ভক্ত কখনও কোন যোগে  
 মনে নাই। তিনি বরাবর সমান কষ্ট ও সবল ছিলেন। বিশ বর্ষের  
 জারজ হবার উল্লিখগুলি স্মরণ ছিল। অপর একজন নিয়ামিশাবী  
 গাঙ্গুলি ইত্যাদি করেন এব কাগজে তাহার ছবিও প্রকাশ করেন। তিনি  
 কল্যাণার্থীকামপণ্ডিত। নাম কাপ্তেন গডলাউ ই, ভারতও। ১১ ২  
 ১৯৩৩ ১৯৩৬। এই অত্রিভূক্ত যোদ্ধাবীর সেই সময়ে সানফ্রানসিস্কা  
 মহানগরকে ব্যাধান শিক্ষা দিতেন। তিনি ক্রমাচার ৬৩ বৎসর কোন  
 যোগ্য কর্মে ভ্রমণ করেন নাই। বখন তাহার ১০০ একশত বৎসর বয়স  
 হইলে তিনি প্রতিদিন ২০ বিল মাস্ট পথ হাটিতে পারিতেন। এইরূপ বৎ  
 স্কলি বৃদ্ধি হওয়া নাইতে পারে।

অপেক্ষিত দ্বারা কুটব্যাধি ও অপবাণর নানা প্রকার রুটল ব্যাধি উৎপন্ন  
 হয়। হাঙ্গ ও মৎস্য ভক্ষণের ক্ষুদ্রই অল্পে কত প্রকৃতি বোগও দেখা যায়।

শিগসোরস, পেটো, অবিষ্টোল, সক্রিটশ, হাইপেটিয়া অ্যাম ব্রিচাস্  
 হাইপেটিশ, স্ট্রটার্ক, সেপেকা বৃদ্ধ চৈতন্য রাম, শ্রীকৃষ্ণ প্রভৃতি এব  
 মোহাটোর ঐষ্টিয়ান্ সাধু জেমস্ ম্যাথু, গ্রেট পিটাব, মিগটন, নিউটন  
 বেগনি পেইগিন, মেলশন, ওয়েলি টন, সিলি পালি ওয়েলেন্সলি, নিউম্যান,  
 হুইটেন বার্ল, এডিসন ডেনেরেন যুগ ইহা বা সকলেই নিয়ামিশাবী।  
 ক্ষুদ্রচাৰ্য্য প্রকৃতি মহাত্মাগণ কখনও মা সাদি ভ্রমণ করিতেন না। স্যাম  
 হেই টেনসনও মা সাতাবেব বিশ্বে অনেক প্রমাণ দেখাটয়া শিখাছেন।

অন্য কেবল আমবা হৃৎসের দিক দিয়াই মা-সাহায্যের অপকাৰিতা  
 বুঝাইতেছি, তাহা নহে। জীবের প্রতি নিদ্র হইয়া তাহাদিগকে বিনাশ  
 করা আমবা যেমন দু প্ৰভনক মন করি তেমনি ঐ সকল পশু মা গুণ্যগণ  
 আনাদের পক্ষে বড়ই ভয়জনক। অন্যএব হে দাহুগণ, বহুগণ, হে শুধুগাতি  
 পরাশী হিন্দুগণ, হে ধারিকগণ, অগ্ননা বা বিচারপুসক বীহি মা পবিস্য।  
 করিয়া খাঁর হৃৎসের উন্নতি করণ এবং ভগবানের আশ্বিনাদ লাভ করণ  
 হই আমবা প্রার্থনা করি।

চাঙ্কি সে যে দয়াময় তোমাকে ও আমাকে, পুত্রকে ও মানবকে সৃজন  
করিয়াছেন, তাহার চিন্তাবে, আমি ও তুমি, পুত্র ও মানবে তিনি সৃষ্টিতে  
কোন পার্থক্য করিয়াছেন কি? তিনি পুত্রম দয়ালু তিনি সঙ্গজীবে সমভাবে  
দয়া করেন। অতএব আমরা যে কোন ধর্ম লাভ করিবার জন্য পুত্র বৎ  
করি তাহা জানি না।

এখন মা স ভক্ষণ সঞ্চয় হুই একটি কথা বলিয়া আমাদের বক্তব্য শেষ  
করিব।

পূর্কই বলিয়াছি, হৃদয়ের দিক দিয়া দেখিতে গেলে দেখা যায় কোন  
ধর্মতেই পুত্রবৎ সুক্টিসিদ্ধ বলিয়া প্রচার করেন নাই।

বিজ্ঞানের হিসাবে দেখিতে গেলে দেখা যায়, পুত্রমা স ভক্ষ। ধারা আমরা  
উৎকৃত না হইয়া বৎ অধিকতর অপকৃত হইয়া থাকি ?

যাহারা দীর্ঘজীবন লাভ করিতে চাহেন এবে সবল ও নিরোগ হইতে ইচ্ছা  
করো তাহারা ইহা বেশ মনে রাখিবেন যে শক্তি অপু তেজ মর্য ব্যান  
হুইন্ত জীবনে সুস্থ হইয়াছে। এই সকল জীবনের বায়ু পিত্ত কক সম্বারে  
পরিপুষ্ট এবে বিনষ্ট হয়। পুত্রমা স ভক্ষণ দ্বারা এই সকল বায়ু পিত্ত ককাদি  
আশ্রিত জীবনেই আমবা ভক্ষণ করিয়া তাহার দোষগুণ শরীরে প্রবেশ করি।  
বায়ু পিত্তের বিকৃতি না হইলে জীব কখনও মরে না এবে যুগ্মদেহের মা সগুলিত্ত  
অতিশয় দুর্ভিক্ষ ও বিষাদযুক্ত হয় অতএব এই বায়ু পিত্ত ককাদি দোষবর্জিত দেখ  
ভক্ষণ করিতে কি আমাদের চুণা হওয়া উচিত নহে ?

মা স ও ম-প্রাদি ভক্ষণ দ্বাৰাই মাহুযেব ভেতবে রো। অত্যন্ত বাড়িয়া  
সিরাছে। প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য সকল মনিষীগণেরই এই মত। আমরা মাহুযের  
ধাৰ্য নামক এখে তালা ব্যাখ্যা করিব।

পাশ্চাত্য ডাক্তারগণের মধ্যে সিডনী গার্ডন বলেন একমাত্র ব হু মা স  
ভক্ষণেব অতই মাহুযের মধ্যে অনেক কঠিন রোগ উৎপন্ন হয়। মি বিয়ার্ড  
মৎগ মাংস ভক্ষণের অপকারিতা প্রমাণ করিষ্ঠ প্রায়সী হইয়া অনেকগুলি  
নিবামিশরী ব্যক্তির দুষ্টান্ত দেখান। তিনি আপনার কাগজে একাশী ব শরেষ



জীবের নয় ।

সম্মুখে শাবলীর পূজা আশিষ্যেছে । আপনাদিগের পূজা হইতে তাহা  
আগমন হইবে । আপনাবা এবার বিগতকালিতে পরিহাস্যে হাংসর  
অপবিত্রকর বলি না দিয়া এবার মায়ের পূজা করুন দেখিবেন কত আ  
তৃপ্তি এবং মায়ের অনীর্কামেও আপনাদেয় সফলতীষ্ট লাভ হইবে । )

হিংসা হইতে বর্জিত হইয়া । হিংসা হইতে চিত্তের সৌন্দর্য্য  
হিন্দু হইতে মনের তেজ কমিয়া যায় । এবং হিংসা হইতেই হোষ্ট মন  
আনন্দন করে । হিংসা সর্বত্রই নিলম্বী ও আঘাতনক । অতএব হিংস  
সর্বত্রইকে অন্ধর দিয়া অসদাশ ভগবানের শব্দ শ্রবণে বাসন্য ব্রহ্ম  
কামিয়া সফলতীষ্টের মঙ্গল কর ইচ্ছাই প্রার্থনা করি । —

১লা জ্যৈষ্ঠ, ১৩২০ সাল কলিক



বিশ্ব ক্রেতব্য — অসুখের কবিতা পাঠা ও অপরকে পতি  
য়ে বাবিত্ত হইবে ।

বিগী—

তার





... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...  
 ... का ...

... १९२० ...



